सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, (LEF,Chennai)

सितम्बर-अक्तूबर, 2005

डरो मत, खड़े रहो

परन्तु मूसा ने लोगों से कहा, 'डरो मत, खड़े-खड़े यहोवा के उद्धार को देखो जो वह आज तुम्हारे लिए करेगा, क्योंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देख रहे हो, उन्हे फिर कभी न देखोगे।' निर्गमन (१४:१३)

मूसा का परमेश्वर पर विश्वास असाधारण है। इस अकेले भक्त को बहुत ही विचित्र परिस्थितियों से गुज़रना पड़ा। उनका अभिवादन करने वाला या प्रोत्साहित करने वाला कोई भी आदमी उनके साथ नहीं था। जिस प्रकार यीशु कुछ समय जंगल में बिताकर प्रचार आरम्भ करने के लिए निकल आये वैसे ही मूसा भी परमेश्वर की बुलाहट पर जंगल से निकल आये।

उस एकाकी जीवन (के दौरान) जो मूसा ने अरण्य में बिताया उन्होंने परमेश्वर से बहुत कुछ सीखा और बहुत कुछ भुला भी दिया। मिस्र देश के महाविद्यालयों में उन्होंने शिक्षा पाई, जिसने उनको एक बहुत ही शक्तिशाली आदमी बनाया। मगर परमेश्वर की पाठशाला अलग है। हमें भी बहुत कुछ सीखना है और (बहुत

पृष्ठ २ पर..डरो मत.....

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

धन-दौलत की मूर्ति

देखो, एक मनुष्य ने उसके पास आकर कहा, ''हे गुरू, मैं कौन-सा भला कार्य करूं कि अनन्त जीवन पाऊँ? मत्ति (१९:१६) ''

एक रईस नौजवान से मुलाकात के बाद प्रभु यीशु मसीह ने कहा, ''धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना बड़ा कठिन है। इससे एक ऊँट का सूई के छेद में से निकल जाना कहीं अधिक सरल है।'' शायद इस से यीशु यरूशलेम की शहरपनाह में उस छोटे बगली प्रवेशद्वार की ओर संकेत कर रहे थे। मुख्य द्वार बन्द करने पर उसका इस्तेमाल किया जाता था।

यीशु की टिप्पणी पर उनके चेले पूरी तरह से भोंचक्के रह गये। वे वास्तविक रूप से उनके (लोगों के) धर्म की उन्नति की चाहत करते हुए, धनवानों से धार्मिक भेंट स्वीकार करते थे।

यह रईस नौजवान निश्चित रूप से महसूस कर रहा था कि वह व्यवस्था का पूरी तरह से पालन कर रहा है। संभवतः उसने कई बड़ी भेंटें चढ़ाई होंगी। वह स्पष्टतः एक धार्मिक आदमी था। उसने यीशु के सामने घुटने टेके। (मरकूस १०:१७) और उनको 'उत्तम गुरू' कहकर सही पुकारा। उसने अनन्त जीवन के बारे में पूछताछ की। यह बड़ा दुर्भाग्य था, उसके हृदय में धन दौलत एक मूर्ति के रूप में समाई थी और वह स्वर्ग के लिए अयोग्य ठहरा।

धनदौलत की मूर्ति (मूर्ति का अर्थ- कोई भी वस्तु या चीज से, परमेश्वर से बढ़कर प्रेम करना), चालाकी से तुम्हारे हृदय में प्रवेश कर सकती है और बहुतों के लिए यह एक फन्दा है। परमेश्वर का काम अमरीकी डॉलर या ब्रिटिश पॉन्ड से निर्मित किया जाता है, यह विचार इस मूर्ति का एक और प्रकटीकरण है।

पतरस ने परमेश्वर के राज्य में अपने साझे का दावा करते हुए यह उत्तर दिया, ''देख, हमने तो सब कुछ त्याग दिया। मत्ती (१९:२७)'' क्या हम ऐसा दावा कर सकते हैं? एक रईस आदमी के लिए सब कुछ छोड़ना निश्चित रूप से संभव है। अब्राहम हमारे लिए एक उदाहरण है। उनके लिए धन दौलत समस्या बिलकुल नहीं थी। वे उससे बंधे नही थे। फिर भी, आज रईस से लेकर गरीब तक अनेक लोग पैसों से एकदम सम्मोहित हैं।

हम सम्मेलनों और संजीवन (आत्मिक जागृति की) सभाओं का आयोजन कर सकते हैं। वह बिलकुल कठिन नहीं है। मगर कुछ समय के बाद यह सब आध्यात्मिक गतिविधियां नीरस आदत बनने के स्तर तक गिर सकती हैं। उथले मसीही लोग मुझे केवल दुखी ही करते हैं। लोग जो बचने को जानते, काफी अच्छे भले दिखते हैं मगर लोगों के लिए आँसू नही बहाते।

यह साफ तौर से नज़र आता है कि हमारे सर्वोत्तम लोगों मे से भी उन विशाल चुनौतियों के बराबर कोई नहीं है, जिनका हम आज सामना कर रहे हैं। सुसमाचार केन्द्रों की बढ़ती संख्या के साथ आती है हमारे विश्वास की बढ़ती मांग। दिमागी स्तर पर जानकारी से संसार भरा है मगर विश्वास एक दुर्लभ वस्तु है।

दुर्भागयवश, कुछ नौजवान जिनको हम सेवा के लिए भेजते हैं, शैतान के

पृष्ठ ३ पर..धन-दौलत की मूर्ति..

पृष्ठ १ से डरो मत...

कुछ) भुलाना भी है। हमारा परमेश्वर महान है। परमेश्वर के पास आकर उनको सीमित न करना। आपके अन्दर ऐसी योग्यता है जो परमेश्वर की योजना में सही बैठती है। परमेश्वर यीशु के द्वारा हममे कार्य करते हैं और हम उनकी निगाह में महान दिखते हैं। तुम कितने साधारण और नम्र हो, और कितनी गहराई से अपने हृदय की बेईमानी और अपने बिगड़े स्वभाव को समझते हो, इस पर तुम्हारी महानता निर्भर है। जितना ज्यादा तुम अपने विध्वस्त स्वभाव को समझते हो उतना ज्यादा परमेश्वर तुम में अपनी सामर्थ्य डाल पायेगें और अपने जैसे काम तुम से करवायेंगे।

मुझे आश्चर्य होता है कि एक अकेला आदमी होकर भी मूसा कैसे परमेश्वर में बढ़ा। जो आदमी एकांत में अच्छे से अपने जीवन को व्यतीत करता है, यह पाता है कि वह समय उसके लिए बहुत ही लाभदायक है। हमें अपनी एकांत (व्यक्तिगत) प्रार्थना की वृद्धि करनी चाहिए। जब मूसा परमेश्वर के साथ अकेला था, परमेश्वर का सान्निध्य और स्वर्गदूतों के आने-जाने ने ज़रूर उनकी बहुत सहायता की होगी। ज़रा मूसा का साहस देखिए। बड़े तानाशाह, फिरौन से वह दृढ़ता से बातें कर रहा है। क्या आपको निश्चित रूप से विश्वास है कि परमेश्वर ने अपनो बुलाया है ? अगर उन्होंने तुम्हें बुलाया है तो यह बहुत गंभीर बात है। तुम्हें सारी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। परमेश्वर से बुलाया जाना एक भयंकर बात है क्योंकि उस बुलाहट की बड़ी मांगे तुम्हारी पहुँच से बाहर ही हैं। हमें बहुत नम्र और सावधान रहना चाहिए। पैदल चलते समय हम कितनी प्रार्थना कर सकते हैं ! बस में सफर करते समय हम कितनी प्रार्थना कर सकते हैं ! तुम मनन की कितनी गहराई में जा सकते हो !

जब मिस्र देश की सेनायें उन पर आक्रमण के लिए आ रही थीं, तब क्या विश्वास मे डटे रहना आसान था और यह आज्ञा देना कि खड़े रहो (निश्चिंत)। मेमने के वध पश्चात् ही मूसा ने मिस्र देश से अपनी यात्रा का आरम्भ किया था। वह मेमना जिसका वध हुआ और लहु जो हमारे लिए बहाया गया, उनके बारे में हमें ज्यादा से ज्यादा सोचना चाहिए।

परमेश्वर ने हमें हमारे पापों के अनुसार प्रतिफल नहीं दिया है। जो परमेश्वर की ओर से नहीं है, हमें उन सब बातों को अपनी जिंदगी से बाहर कर देना चाहिए। तुम्हारी आत्मा प्रभु की सेवा करना चाहती है मगर शरीर तुमसे अपने हिस्से की मांग करता है, अपने तरीके से जिदंगी का आनंद उठाने के लिए तुम्हें चलाता है। जिससे आत्मा के लिए अड़चन पैदा होती है। यदि शरीर पर पवित्र आत्मा का नियंत्रण है तो तुम में परमेश्वर की महिमा होगी। प्रारम्भ में शरीर और आत्मा के बीच में संघर्ष होगा, मगर एक दिन आत्मा ही बागडोर संभालेगी। जब शरीर प्रभुता करता है, तब तुमसे कोई महत्वपूर्ण प्रतिफल नहीं निकलता।

जब हम मूसा के जीवन का अध्ययन करते हैं, यह सीखते हैं कि परमेश्वर के असीम साधनों को हम काम में ला सकते हैं और परिपूर्णता से जिन्दगी को जी सकते हैं। महान संकट के सामने उन्होंने कहा, खड़े रहो (निश्चिंत)। सारे इस्राएली मूसा के साथ मेमने की बलि में एक मन थे। कितना महान उद्धार उन्होंने देखा ! और परमेश्वर ने उनसे कानों से सुनने वाली आवाज़ में बातें की।

ऐसा उद्धार देखने के लिए हम परमेश्वर की प्रतीक्षा करें। बहुत ही जल्द इस्राएलियों ने उनके खुंखार और शक्तिशाली शत्रुओं के मृत शरीरों को पानी की सतह पर तैरते देखा। मसीह अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा जो सामर्थ्य इस दुनिया में लाये उसे पाने के लिए क्या हम अपने उद्धारक की ओर देखें ? तुम विजय पाओगे। तुम जीत प्राप्त करोगे। जो ताकतें तुम्हें कुचलने के लिए तुम्हारे ऊपर आ रहीं हैं वे मरी हुई ताकतें हैं। तुम उन्हें गायब होते देखोगे और विजय पाओगे।

-एन दानियेल।

For More Details Please contact on any of the following Addresses.

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
GWALIOR : L-95, Madhav Nagar, Gwalior-474002, Madhya Pradesh. Ph.0751-2636434
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

स्थायी अभिलेख

मांट्रिएल न्युरॉलॉजिकल इन्सटिट्यूट के निर्देशक डॉ. विलबर पेनफील्ड ने स्मिथसोनियन इन्सटिट्यूट को दी एक रिपोर्ट में कहा, 'तुम्हारा दिमाग, तुम्हारे अतीत की घटनाओं का एक स्थायी लेखा रखता है। वह एक फिल्म की रील के समान है जहाँ दृश्य और आवाज़ दोनो रिकार्ड में हैं। यह 'फिल्म-पुस्तकालय' बचपन से लेकर तुम्हारे पूरे जीवन को रिकार्ड करता है। जब एक शल्यचिकित्सक तुम्हारे दिमाग के किसी खास बिन्दु पर हलका बिजली का झटका दे तो तुम बीती हुई उन घटनाओं (दृश्यों) को एक-एक करके फिर से जी सकते हो।' वह रिपोर्ट आगे जाकर कहती है कि जब तुम अपने अतीत की घटनाओं को फिर से जी रहे होते हो, तब मूल अनुभव के दौरान जो महसूस किया था, ठीक वैसी ही भावनाओं का अनुभव करोगे।

क्या ऐसा है कि परमेश्वर की न्यायिक अदालत में इस अखंडच्य अभिलेख से मानव जाति का सामना होगा, जब 'यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा? रोमियों (२:१६)' परमेश्वर के बच्चों के दोषी अतीत के सम्बन्ध में हम यह जानते हैं कि परमेश्वर ने ''काली घटा के समान (उनके) अपराधों को, और घने कोहरे के समान (उनके) पापों को, मिटा दिया है। ''(यशायाह ४४:२२)। उनके पापों को गहरे समुद्र में डाला है, और 'उनके पापों को और उनके अधर्मों को स्मरण नहीं करेगा।'

- चुना हुआ।

मसीह (यीशु) का प्रचार

उस महान उपदेशक, जिप्सी स्मिथ से मिलने एक यूवा प्रचारक गया। जिप्सी की मृत्यु से कुछ ही महीने पहले यह साक्षात्कार हुआ था। वह जवान उपदेश देने की तैयारी के विषय में, आत्मिक मूल्यों और तरीकों पर कुछ सलाह प्राप्त करना चाहता था।

बूढ़े जिप्सी ने साक्षात्कार के दौरान कहा 'नौजवान, चाहे तुम कुछ और प्रचार करो या न करो, मगर निश्चित रूप से यीशु मसीह का प्रचार करना। क्योंकि आज स्त्री-पुरूष सासांरिक समस्याओं के विषय में तुम्हारी राय सुनने के लिए नहीं मर रहे हैं, और न ही सामाजिक परिस्थितियों के बारे में तुमहारी घोषणायें सुनने के लिए, मगर वे यीशु के बारे में सुनने के लिए भूखे हैं।'

'मगर', वह फिर कहने लगे, 'यीशु के प्रचार योग्य बनने के लिए, तुमको स्वंय यीशु से गहरा प्रेम होना चाहिए - इतने व्यक्तिगत रूप से और इतनी घनिष्ठता से उनसे प्रेम करना कि तुम्हारे जीवन में वह पूर्णतः वास्तविक और अदभुत व्यक्ति बन जाएँ, इतने यथार्थ और महिमान्वित कि तुम यीशु के बारे में बताओ, यीशु को जीओगे, यीशु के बारे में गाओगे। और जहाँ भी जाओ, अपने जीवन में उनके अनुग्रह के अनोखे चमत्कार का गवाह बनोगे।'

हाँ यीशु के बारे में जो हम तीव्र आग्रह करना चाहते हैं उसमें बढ़ने का यही मार्ग है - बढ़ता प्रेम, बढ़ता समर्पण और यीशु के प्रति समर्पण। जिप्सी के वो शब्द प्रचारकों के लिए केवल अच्छी सलाह मात्र नहीं हैं, वे हरेक के लिए महत्वपूर्ण शब्द हैं जो उस सुन्दर नाम - ईसाई (मसीही) को धारण करते हैं। ओह, यीशु से ऐसा प्रेम करना ताकि हमारी सेवा और हमारी साक्षी और हमारी गवाही और हमारा जीतना तीव्र आग्रह से भर जाए।

- सी विल्यम फिशर।

पृष्ठ १ से..धन-दौलत की मूर्ति..

भयानक हमलों में परास्त हो रहे हैं। प्रत्येक कोण से और हर संभव तरीकों से शैतान आक्रमण करता है। वह हमारी गवाही का और स्वंय व्यक्तित्व के विनाश से कम निशाना नहीं लगाता। हमें डटकर उसका विरोध करना है।

''अनके जो प्रथम हैं अन्तिम होंगे'' (मत्ती १९:३०)। बाइबल संबंधी स्तर पर और विशेषतः हमारे परिवारों की पवित्र साक्षी को मुख्य विषय बनाकर इस मंडली का आरंभ हुआ था। शैतान इस क्षेत्र पर केंद्रित करना चाहेगा। परमेश्वर ने हमें पर्याप्त रोशनी दी है, मगर शैतान चाहता है कि हम अंतिम ठहरें।

हम सतर्क और संयमी रहें तथा शैतान के प्रत्येक आक्रमश का दो टूक जवाब दें। मुख्य विषयों, अनिवार्य विषयों - में परमेश्वर की महान बुलाहट का हम मान रखें।

- जोशुआ दानियल।

सत्य की परख!

क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई अपना प्राण मेरे लिए खोए वह उसे बचाएगा। लूका (९:२४)

परमेश्वर के साथ संगति में अड़चनें

क्या आप ऐसे व्यक्ति हैं जो लोगों की वाह-वाही को बहुत मूल्यवान समझते हो? और जब लोग आपकी बड़ाई करें तो मन खुशी से भर जाए, यदि यह सुनने को मिले कि लोग बुराई कर रहे हैं तो मन बहुत उदास हो जाए।

क्या आप उनसे बहुत अधिक प्रेम करते हैं जो आपको बड़ा सम्मान देते हैं? और उनके प्रति आपका मन कड़वाहट से भरा रहता है, जो आप मानते हैं कि आपको खास महत्व नहीं देते। यह लोग चाहे ईमानदार तथा परमेश्वर का भय मानने वाले ही क्यों न हों?

क्या आप ऐसे व्यक्ति हैं जिसकी सारी इच्छाएँ पूरी होनी चाहिए? दूसरों के ऊपर आपका ही निर्णय चले और आपके मुख से निकला वचन सबके लिए नियम माना जाए?

क्या आप उस हर व्यक्ति से झगड़ा करने को तैयार रहते हैं जो आपके सम्मान में एक भी शब्द की कमी होने दे?

क्या आप नम्रता को नीच अधम मानते हैं और झुकना, समर्पण करना नहीं जानते? और परमेश्वर के प्रति या अपने भाई के प्रति अपराध करने पर अपने आप स्वीकार करने के द्वारा नम्र करना नहीं जानते?

क्या आप ऐसे व्यक्ति हैं जो अमीर विश्वासियों का सम्मान करते हों और यदि वे आपका सम्मान करें और आपको एहमियत दें तो आप अपने आपको महान समझें? लेकिन गरीब विश्वासियों के साथ अजनबियों-सा व्यवहार करें तथा उनका साथी बननें में बड़ी शर्मिंदगी महसूस करें।

क्या आप ऐसे व्यक्ति हैं जो परमेश्वर की कम महत्व वाले कामों में और अधिक महत्व वाले कामों में सेवा नहीं कर सकते, और अपने आपको बड़े पदों के योग्य समझते हो? तभी परमेश्वर की सेवा करना चाहते हो जब उससे आपकी तरक्की हो?

क्या आपको मौका मिलने पर अपनी बात आगे रखने से बड़ी खुशी होती है और आपके नाम की चर्चा चारों तरफ होना बड़ा अच्छा लगे। क्या आप अपनी बड़ाई के लिए कोई समारक बनाना चाहते हैं कि आने वाली पीढ़ी आपके देहान्त के बाद आपकी बड़ाई की बातें करे?

क्या आप अपना बचाव करने को और अपने आप को निर्दोष साबित करने को ज्यादा तैयार रहतें या अपने ऊपर आरोप लगाने या अपनी गलती स्वीकार करने को?

क्या आप अपनी गलती पर डाँट सुनने में बड़ी कठिनाई महसूस करते हैं? यदि आपसे सीधे-सीधे बात की जाए तो आपको मुश्किल हो जाती है और बात कड़वी लगती है?

क्या आप दूसरों से सीखने की बजाय दूसरों को उपदेश देना पसंद करते हैं ? क्या आप दूसरों के निर्देश को सुनने से बढ़कर अपना आदेश देना ज्यादा पसंद करते हैं?

क्या आपको अपनी मान्यता पर पूरा भरोसा रहता है? और अपनी समझ की कमज़ोरी पर ज़रा सा भी संदेह नहीं होता? जो आपके विरोध में निर्णय लें तो आप उसका हमेशा खण्डन करते हैं?

क्या आपका व्यक्तित्व दूसरों को आदेश देना ज्यादा पसंद करता है उससे आदेश पाने और आज्ञा मानने से बढ़कर?

क्या आप अपने शिक्षकों की शिक्षा की निन्दा करने को तैयार रहते हो? अपने अधिकारियों तथा अपने भाईयों की निन्दा करने को तैयार रहते हो?

यदि यह लक्षण सचमुच आप में हैं, निःसंदेह आप एक घमण्डी व्यक्ति हैं। एक घमण्डी के लिए वह स्वंय परमेश्वर है। वह स्वंय अपनी बड़ाई करता है और अपनी पूजा करता है। यह कैसे संभव है कि उसका प्रेम परमेश्वर पर लगा हो? क्या यह संभव है कि इस व्यक्ति का मन स्वर्ग पर लगा हो?

मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि इस विषय में अपने मन से ईर्ष्या करो। इस से बढ़कर दूसरी ऐसी कोई चीज़ नहीं,जो आपको परमेश्वर से दूर करे। मैं इस के विषय में इतने विस्तार से इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि यह बड़े आमतौर पर पाया जाता है और नैतिकता में खतरनाक और अविश्वास को फैलाने वाला सब से भयंकर पाप है।

हे मसीही व्यक्ति, यदि तू सदा अपने प्रभु की संगति में रहना चाहता है तो उससे नम्रता तथा दीनता सीख, तब तू अपनी आत्मा में उसके विश्राम को पाएगा। नहीं तो तेरी आत्मा उथल-पुथल सागर के समान रहेगी, कीचड़ उछालती हुई, जो ठहर नहीं सकता, परमेश्वर के मीठे आनंद से वंचित। तेरा अभिमान तुझे लगातार अशांत रखेगा। वह नम्र आत्मा है जो परमेश्वर को नहीं भूलता। इस कारण परमेश्वर नम्र तथा पाप को स्वीकार करने वाले के साथ संगति करता है और उसकी आत्मा में नया जीवन भरता है।

- रिर्चड बैक्सटर।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।